वर्ष १२] दिसम्बर १९२८—मार्गशीर्ष १९८५ [संख्या १२

श्याम !

कुटिल कमान जैसी तन जातीं भौंहें कभी,
मेरी नीच वृत्तियों का ध्यान जब आता है।
व्यक्त भाव करती है नासिका सिकुड़ कभी,
मेरा रङ्ग-ढङ्ग नेक तुम्हें न सुहाता है।
ऐसी भावनाओं को जानते हुए भी नाथ,
बार बार मन दौड़ तेरी ओर जाता है।
चाहता है वामन उचक छूना चन्द्रमा को,
प्रेम जब निजरूप प्रकट दिखाता है॥

देवीदत्त शुक्ल

त्यागमूर्ति पण्डित मोतीलाल नेहरू

बालको, तुमने त्यागमूर्ति पंडित मोतीलाल नेहरू का नाम सुना होगा। ये हमारे देश के बिना ताज के बादशाह हैं। तुमने कांग्रेस का भी नाम सुना होगा। कांग्रेस देशभक्तों की सबसे बड़ी सभा है। हर साल के अंत में, यानी दिसम्बर में, कांग्रेस का एक बड़ा जलसा होता है। यह जलसा कभी किसी शहर में होता है, कभी किसी शहर में। इस वर्ष यह जलसा कलकत्ते में होगा। हिन्दुस्तान भर के देशभक्तों ने मिलकर पण्डित मोतीलाल नेहरू को इस वर्ष कांग्रेस का सभापति बनाया है। इसके पहले भी एक बार आप कांग्रेस के सभापति रह चुके हैं।

पण्डित मोतीलाल नेहरू के बारे में तुम और भी बहुत सी बातें जानना चाहोगे। अच्छा सुनो। पण्डितजी का जन्म संवत् १९१८ ईसवी में हुआ था। जब आप मा के पेट में थे तभी आपके पिता का देहान्त होगया था। जन्म लेकर आपने मा का दुःख दूर किया। बड़े होकर आप भारत माता का दुख दूर करने में लगे हैं।

पिता के मर जाने पर बड़े भाई ने आपका पालन-पोषण किया। बड़े भाई का नाम नन्दलाल नेहरू था। शुरू में पण्डितजी को अरबी और फ़ारसी पढ़ाई गई। उन दिनों फ़ारसी पढ़नेवालों का बड़ा आदर था। पण्डितजी के पिता भी फ़ारसी के अच्छे विद्वान् थे और मरने से पहले दिल्ली में कोतवाल थे। बारह वर्ष के हो जाने पर पण्डितजी ने कानपुर में अँगरेज़ी पढ़ना शुरू किया। वहीं से आपने वकालत पास की। वकालत में आप अव्वल पास हुए।

कुछ दिन कानपुर में रहकर आप प्रयाग चले आये। और यहीं वकालत करने लगे। आप जिस काम में जुटते थे जी-जान से जुटते थे और उस काम में सबसे आगे रहना चाहते थे। इस स्वभाव के कारण आपकी वकालत
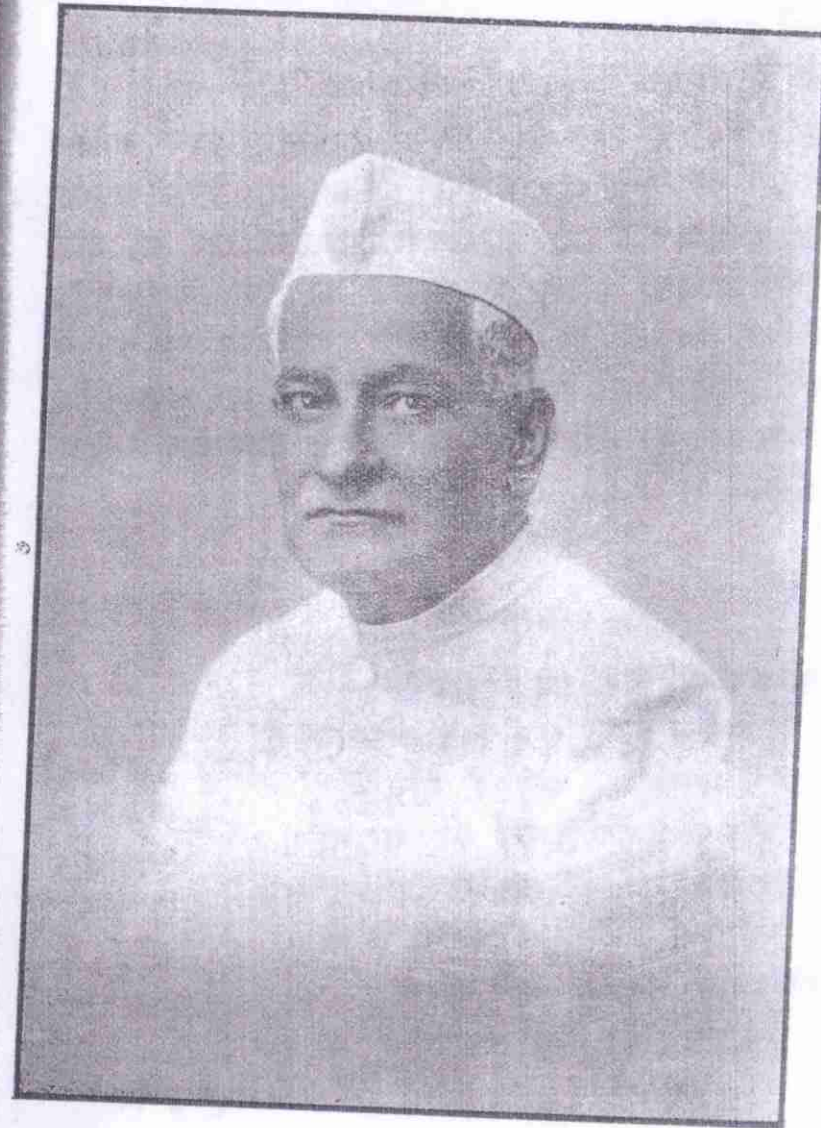
त्यागमूर्ति पण्डित मोतीलाल नेहरू

ख़ूब चली। और आप पचीस हज़ार मासिक तक पैदा करने लगे। आपका ठाट-बाट राजाओं का-सा होगया।

मगर शीघ्र ही पण्डितजी ने सोचा कि हिन्दुस्तान· ग़रीबों का देश है। सब ग़रीब हमारे भाई हैं। हमें पहले ग़रीब भाइयों का दुख दूर करना चाहिए। बस आपने अपना राजसी ठाट-बाट बदल दिया। पचीस हज़ार महीने की वकालत पर लात मार दी। रेशमी कपड़े आग में झोंक दिये। मोटा खद्दर का कुर्त्ता और उसी की टोपी पहन कर देश के ग़रीब भाइयों की सेवा में लग गये। दरवाज़े दरवाज़े फिरे, जेल गये, पर हार नहीं मानी। आज भी उसी काम में लगे हुए हैं। आप हिन्दू-मुसलमान, सिक्ख-ईसाई सबको अपना भाई समझते हैं। सबको बराबर प्यार करते हैं। इन्हीं गुणों के कारण आप हिन्दुस्तान के बिना ताज के बादशाह समझे जा रहे हैं।

जाड़ा

जाड़े ने पछाड़ दिये जग के पहलवान
दीखता न कोई ऐसा चलता अकड़ कर ॥
पानी में उतरने से डरते हैं सूरज भी
पेड़ पर हिलते हैं पत्ते सर सर सर ॥
मरती है मच्छर की नानी अब देख देख
चिड़ियों ने घोंसले में ढके सिर पैर पर ॥
बजते हैं दाँत सब कट कट कट कट
काँपती है देह 'विशु' थर थर थर थर ॥

विद्याभूषण 'विभु'

मिस्र देश की सैर

अगर तुम किसी हिन्दू लड़के से पूछो कि तुम्हारे सिर पर चोटी क्यों है तो वह शायद कुछ जवाब न दे सकेगा। दुनिया के नक़शे में मिस्र यानी ईजिप्ट देश देखो। आज-कल यहाँ जो लोग रहते हैं वे हिन्दू नहीं हैं। मुसलमान हैं। लेकिन वे हिन्दुओं की भाँति चोटी रखते हैं। और
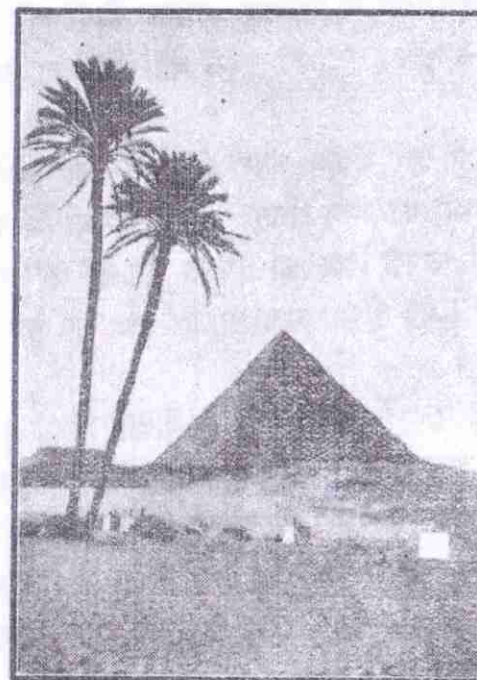
पिरमिड

यदि तुम उनसे पूछो कि तुम्हारे सिर पर चोटी क्यों है तो वे फ़ौरन जवाब देंगे—"यदि लड़ाई के मैदान में हम मारे जायँगे और हमारे सिर काट लिये जायँगे तो दुश्मन चोटी पकड़ कर सिरों को उठा ले जा सकते हैं। चोटी

रहेगी तो जिस मुंह से हम ईश्वर का नाम लेते हैं उसमें उँगली छोड़ कर उन्हें वे अपवित्र न करेंगे।" इससे यह साबित होता है कि मिस्र के लोग बड़े बहादुर होते हैं और लड़ने-मरने को सदा तैयार रहते हैं।

मिस्र देश के रहनेवालों का धर्म छोड़ कर बाक़ी सब बातें क़रीब क़रीब हमारे देश के लोगों से मिलती-जुलती हैं। यह बात जरूर है कि हमारे देश की

माँ बेटे के लिए पानी खरीद रही है

भाँति मिस्र उपजाऊ नहीं है। उसका एक बड़ा हिस्सा रेगिस्तान है। मेलों और बाज़ारों में और सब चीज़ों की भाँति पानी भी बिकता है। पर नाइल नदी के किनारे हमारे ही देश के से दृश्य दिखाई देते हैं। जैसे हमारे देश में गङ्गा का मान है वैसे ही मिस्र में नाइल नदी का। इस नदी के किनारे

ख़ासी खेती होती है। खेतों पर लड़के अपने मा-बाप के साथ काम करते हैं। लड़कियाँ शाम को नाइल नदी से पानी भर कर अपने घरों को ले जाती हैं। अगर हमारे देश में कोई गधे पर चढ़ कर चले तो लोग हँसने लगेंगे पर मिस्र में गधों की आफ़त है। वहाँ लोग ऊँटों पर चढ़ कर चलते हैं या गधों पर। आज-कल के लोगों के ही रीति-रवाज नहीं, प्राचीन काल में भी मिस्र

बड़े लोग गधों पर चढ़ कर चलते हैं

की बहुत सी बातें हमारे देश से मिलती-जुलती थीं। विद्वानों का कहना है कि संसार में सबसे पहले विद्या और ज्ञान का प्रचार हमारे देश में यानी भारतवर्ष में हुआ। हमारे देश से मिस्र ने शिक्षा ली, मिस्र से रोम ने, रोम से सारे योरप और अमरीका ने। हज़ारों बरस पहले मिस्र कितनी तरक्क़ी पर था इसका पता वहाँ की पुरानी इमारतों से चलता है। इन इमारतों को पिरमिड कहते हैं। इन कोबने ६ हज़ार वर्ष हो गये पर ये अब भी ज्यों की त्यों बनी हैं। इसी से

तुम जान सकते हो कि प्राचीन काल में मिस्र के लोग कैसे निपुण थे और फिर उनका गुरु यानी भारतवर्ष कैसा रहा होगा। इन पिरमिडों के भीतर बड़े बड़े कमरे हैं। इन कमरों में बहुमूल्य चीज़ें मिलती हैं जो उस समय के मृत बादशाहों के साथ इनमें गाड़ी गई थीं। इन चीज़ों से उस काल की बहुत सी बातें मालूम होती हैं।

इस जाति के नष्ट होने के बाद अरब वालों ने मिस्र पर अधिकार कर लिया। उसके बाद अँगरेज़ों का राज्य आया। परन्तु अब मिस्र एक स्वतंत्र

स्कूल का कमरा

देश है। उसके निवासियों में अधिकांश मुसलमान और कुछ ईसाई हैं। पहले यहाँ के मुसलमानों में पर्दा बहुत होता था। साधारण आदमियों की स्त्रियाँ भी बिना बेरका ओढ़े अपने घरों से बाहर नहीं निकलती थीं। धनी आदमियों की स्त्रियाँ तो कभी निकलती ही नहीं थीं। अब धीरे धीरे पर्दा उठ रहा है। पुरुष और स्त्रियाँ दोनों पुराने ढङ्ग की पोशाक छोड़ कर नये ढङ्ग की पोशाक पहनने लगे हैं। गाँव गाँव में स्कूल खुल रहे हैं और चारों तरफ़ लड़के-लड़कियाँ प्रेम से पढ़ते हुए दिखाई पड़ते हैं। ईश्वर करे, तरक्क़ी की इस दौड़ में हमारा देश किसी से पीछे न रहे।

लक्ष्मीकान्त वर्मा

जुगनू

जुगनू तू मुझसे क्यों डरता मैं तुझको नहीं सताऊँगा।
देख के तेरी चमकीली दुम फ़ौरन तुझे उड़ाऊँगा।

आजा आजा मेरी गोद में क्यों मुझको ललचाता है।
ज्यों ज्यों तेरे पास मैं आऊँ तू मुझसे घबराता है।

जुगनू तेरी हरी चमक मन मेरा अधिक लुभाती है।
कभी कभी यह घट जाती है कभी कभी बढ़ जाती है।

क्या वायू के लगने से यह चमक मन्द पड़ जाती है।
तेरे पेट के नीचे रह रह क्यों बिजली चढ़ जाती है।

तेरे फेफड़ों में ईश्वर ने क्या ही रचना रक्खी है।
दिन में देखो तो कीड़े तू हरे रंग की मक्खी है।

अपनी राह देखने को तू चमक काम में लाता है।
जो कोई कीड़ा तुझ पर लपके भय उसको दिखलाता है।

आजा जुगनू मेरी टोपी में सर को मैं चमकाऊँगा।
थोड़ी देर रोक टोपी में बाद को तुझे उड़ाऊँगा।

फिर ताल किनारे के पीपल पर उड़कर चमक दिखाना तुम।
भाई बन्दों में मिलकर फिर पीपल को चमकाना तुम।

अपनी छाया डाल ताल में दूनी लपट दिखाना तुम।
आसमान के तारागण को चमक चमक शरमाना तुम।

नन्हें हाथों से ऐ जुगनू मुन्नी तुझे बुलाती है।
जब तू इसके निकट है उड़ता गोद से उछली जाती है।

आजा जुगनू आजा जुगनू गौआ दूध पिलाऊँगा।
जब आँखों में निंदिया आवे लोरी गाय सुलाऊँगा।

प्रेमसखा

झींगा और मींगा

एक यहाँ थी छोटी बिल्ली ।
थी वह लेकिन बड़ी चिबिल्ली ॥
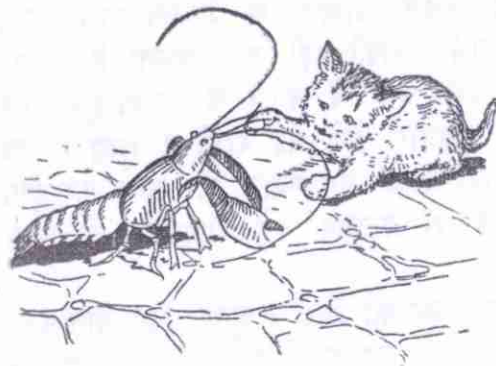
उसे बिलैली कहते थे सब ।
उससे डरते रहते थे सब ॥
एक रोज़ की सुनो कहानी ।
की उसने कैसी नादानी ॥
ज्यों ही ज़रा लगा दिन ढलने ।
वह घर से चल पड़ी टहलने ॥
अजब जानवर देखा उसने ।
मन में अपने लेखा उसने ॥

इसका चलूँ मज़ाक उड़ाऊँ ।
इसको छेड़ूँ और सताऊँ ॥

बस वह उसके पास पहुँच कर ।
बोली—आप कौन हैं प्रियवर ?
किस फ़िराक में घूम रहे हैं ?
किस चिन्ता में भूम रहे हैं ? ॥
मैं झींगा हूँ, पर डरता हूँ ।
विनय यही तुमसे करता हूँ ॥
कहीं न तुम मुझको खा जाओ ।
ओ हो मेरे पास न आओ ॥
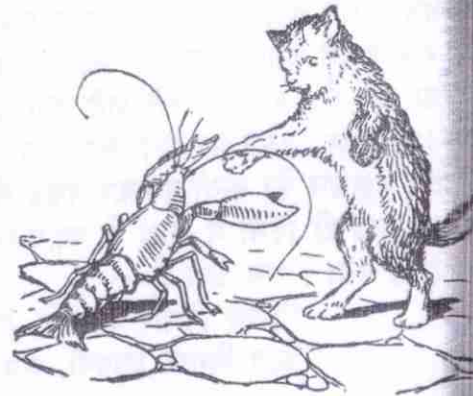
जब है नाम तुम्हारा झींगा ।
तब तुम मुझको जानो मींगा ॥

डरो नहीं आगे बढ़ आओ ।
मुझसे अपना हाथ मिलाओ ॥

झींगा बोला—लेकिन भाई ।
तुमसे कैसे करूँ मिताई ॥
मांस बिल्लियाँ खाया करतीं ।
चुपके-चुपके आया करतीं ॥
हाँ, कहना है सही तुम्हारा ।
पर क्या तुमने नहीं बिचारा ॥
मांस बिल्लियाँ खातीं उनके ।
प्राण न होते तन में जिनके ॥
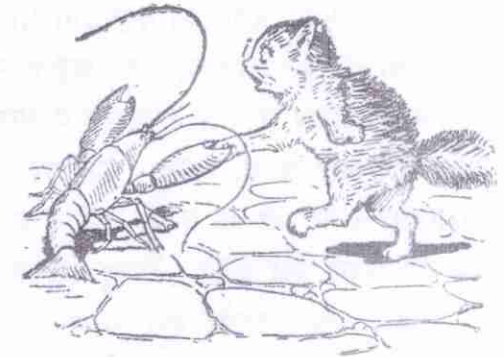
हाथ मिलाया दोनों ने तब ।
ख़ूब दबाया दोनों ने तब ॥
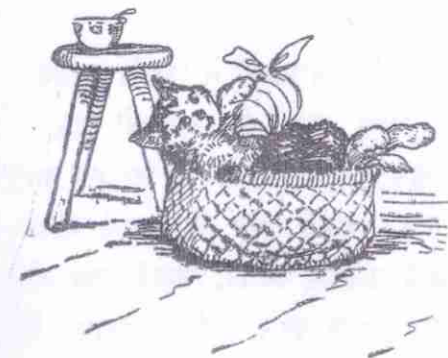
लगी बिलैली अब मुँह बाने ।
हाय हाय करने, चिल्लाने ॥
उस दिन जब वह आई घर में ।
बहुत बहुत चिल्लाई घर में ॥
सोना पड़ा बांध कर पुलटिस ।
करना पड़ा कई दिन, 'सी सिस !'

लालसखा

———

एक मूर्ख महाजन

एक शहर में एक महाजन रहता था। उसके पास बहुत सा धन था जिसको लोगों को क़र्ज़ देता था और .खूब सूद लेता था। उसके घर में उसकी स्त्री थी। लेकिन वह बहुत लड़ाकी थी। महाजन से रोज़ ही लड़ती रहती थी। उस महाजन से क़र्ज़ लेनेवालों में एक ग़रीब ब्राह्मण भी था। वह बेचारा समय बीत जाने पर भी अपना क़र्ज़ नहीं चुका सका। महाजन के कई बार तकाज़ा करने पर भी वह रुपया नहीं दे सका। अन्त में उसने महाजन से एक मास का समय और माँगा। किन्तु उस समय में भी वह रुपयों का इन्तज़ाम न कर पाया। तब उसको एक चाल सूझी। उसको मालूम था कि महाजन और उसकी स्त्री में सदा लड़ाई होती रहती है। महीने के अन्तिम दिन, जब कि महाजन के आने की पारी थी, उस ब्राह्मण ने अपनी स्त्री के गले में छिपाकर एक रबर की नली बाँध दी और उसमें रक्त के समान लाल रङ्ग भर दिया। अपने घर में एक तलवार लाकर रख ली।

जब महाजन रुपये माँगने आया तो ब्राह्मण और ब्राह्मणी ने 'उससे आइए, बैठिए' कहा और पान-सुपारी भी दी। परन्तु उसके बाद ही बात की बात में ब्राह्मण और ब्राह्मणी ने आपस में नक़ली झगड़ा शुरू कर दिया। ब्राह्मण का क्रोध इतना बढ़ गया कि वह नङ्गी तलवार लेकर अपनी स्त्री को मारने दौड़ा और उसको धरती में पटक कर उसकी गरदन में तलवार चलाई, जिससे रबर की नली कट गई, लाल रङ्ग की धारा .खून के समान बहने लगी। ब्राह्मणी ने बिलकुल मुर्दे का रूप बना लिया। महाजन ने समझा कि ब्राह्मण ने अपनी स्त्री की हत्या कर दी है। वह बहुत घबड़ाया और ब्राह्मण को धिक्कारने लगा।

ब्राह्मण ने कहा—"मेरी स्त्री तो सदा ही इस प्रकार मुझसे लड़ा करती है। मेरी तलवार की चोट से जब वह मर जाती है तो मैं उसको पुनः जिला लेता हूँ। क्योंकि इस तलवार में यह जादू है कि इसको कटी हुई गरदन में उल्टी फेरने से मृतक फिर जी उठता है। इस तलवार का काम केवल लड़ाकू स्त्री को बस में करना है। आप घबड़ावें नहीं। देखें! मैं अभी आपके सामने ब्राह्मणी को ज़िन्दा कर देता हूँ।" यह कहकर ब्राह्मण ने कई बार उल्टी तलवार ब्राह्मणी के गले में फेरी। ब्राह्मणी तुरन्त उठ खड़ी हुई। यह अचम्भा देखकर महाजन बड़ा चकित हुआ। उसने ब्राह्मण से विनती करके कहा, "भाई, यह तलवार मुझको दे दो, मुझे इसकी बड़ी आवश्यकता है। मेरी स्त्री सदा मुझसे लड़ा करती है। उसे बस में करने के वास्ते मुझे यह तलवार चाहिए।" किन्तु ब्राह्मण तलवार देने को राज़ी न हुआ। तब महाजन ने फिर कहा, "मैं तुम्हारा सब ऋण मय ब्याज के क्षमा कर दूँगा और एक सौ रुपया नक़द दूँगा।" इस पर ब्राह्मण बड़े एहसान के साथ तलवार देने को राज़ी हुआ।

तलवार लेकर महाजन खुशी खुशी घर को लौटा। दूसरे दिन प्रातःकाल जब उसकी स्त्री ने लड़ाई शुरू की तो मूर्ख महाजन ने बिना विचारे चट एक चोट तलवार की बड़े ज़ोर से अपनी स्त्री की गरदन में मार दी जिससे उसके प्राण-पखेरू उड़ गये। तब महाजन ने, स्त्री को फिर जिलाने की आशा में, उल्टी तलवार उसकी गरदन में फेरी, किन्तु वह फिर सचेत न हुई। तब तो महाजन अपनी मूर्खता पर अति पछताया और स्त्री की मृत्यु पर सिर धुन कर रोने पीटने लगा। इस पर पड़ोस के सब जन इकट्ठा हो गये और महाजन की मूर्खता पर खेद प्रकट करने लगे तथा उसके इस बुरे काम की निन्दा करने लगे। जब इस हत्या का समाचार नगर के राजा के पास पहुँचा तो राजा के सिपाही महाजन को बन्दी बनाकर पकड़ ले गये और उसे जेलखाने में बन्द कर दिया। कुछ ही दिनों में राजा के न्याय से महाजन को उसकी हत्या का उचित दंड मिल गया। सच कहा है—

"बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताय।
काम बिगारे आपनो, जग में होय हँसाय॥"

हीरा जोशी

मुन्ना और रमेश

रमेश ने पूछा—"क्यों मुन्नाजी आज बहुत उबासी ले रहे हो। क्या बात है" ?

मुन्ना ने जवाब दिया—भइया, आज बाबा इटावा गये हैं सो हम आज भर-पेट सोये हैं, अभी तक खुमारी बाक़ी है ।

रमेश—बाबा के इटावा जाने से क्या मतलब ? क्या तुमने सोकर उनके जाने की ख़ुशी मनाई ?

मुन्ना — नहीं तो । बाबा को ख़ुद तो नींद कम आती है सो बड़ी रात रहे उठ बैठते हैं और हमको भी उठा देते हैं । आज उनकी ग़ैरहाज़िरी रहने से भरपेट आठ बजे तक सोये हैं ।

रमेश—तुम बड़ी भूल करते हो । जो अच्छी बात है उसे बुरी समझते हो और बुरी को अच्छी ।

मुन्ना—सो क्यों ? क्या भरपेट सोना बुरा है ?

रमेश—भरपेट सोना बुरा नहीं । रात में तुम जैसे १० वर्ष के लड़कों को ८ से १० घंटे तक सोना काफ़ी है । ज़्यादा सोना ऐब का घर है । देखो रह रह कर आलस्य से किस प्रकार मुँह बा रहे हो ?

मुन्ना—हम तो रात को ८ बजे सो जाते हैं, जाड़े के दिन हैं । तो क्या हमें चार बजे तक ही सोना चाहिए । उस वक़्त तो एक पहर रात बाक़ी रहती है ।

रमेश—उठने के लिए वही समय अच्छा है । यदि उस समय न उठे तो सूर्य उदय होने से एक घंटा प्रथम तो अवश्य ही उठना चाहिए । उस वक़्त उठने से बड़े फ़ायदे हैं, तन्दुरुस्ती ठीक रहती है, उम्र बढ़ती है, बुद्धि तेज़ होती है इत्यादि ।

मुन्ना—भइया तुमने बड़ी बातें गिना डालीं, क्या ये सब सच्ची बातें हैं ?

रमेश—सच्ची क्यों नहीं ? देखो रात को सोना ज़रूरी है । पर आठ घंटे सोकर सूरज निकलने से कम से कम १ घंटा पहले जगना भी ज़रूरी है । क्योंकि नींद से थकावट दूर होती है, परिश्रम और जगने से जो शरीर में कमी आती है वह सोने से ही पूरी होती है । यह कमी ८ घंटे में पूरी हो जाती है । अधिक देर सोने से थकावट दूर होकर आलस्य बढ़ता है । प्रातःकाल उठने

विश्राम पाया हुआ सारा शरीर फुर्तीला हो जाता है और उससे जैसा ाम लेना चाहो आसानी से ले सकते हो । आलस हो जाने से शरीर काम हीं देता । छोटे बच्चे भी सुबह ठीक जगते हैं, पक्षी भी इसी प्राकृतिक यम के अनुसार सुबह जगते हैं और देखो उस समय वे कितने र्तीले और चौकन्ने होते हैं । विश्राम ले चुकने के बाद प्रातःकाल माग़ दुरुस्त रहता है, उससे काफ़ी सोचने-समझने का काम सहज में या जा सकता है । इस वक़्त की सोची-समझी बातें और समय की सोची तों से कहीं अधिक दृढ़ और निर्दोष होती हैं । प्रातःकाल का घूमना, ीचे और खुली हवा में टहलना और चलना तन्दुरुस्ती लाता है और कमज़ोर र सदा बीमार रहनेवाले मनुष्यों को हमेशा मुफ़ीद साबित हुआ है । इसी से ने भारतवासी प्रातःकाल वेद का पाठ करते थे और राहगीर हमेशा ना रास्ता सुबह तय करते थे ।

प्रातःकाल उठने से हाज़मा भी ठीक होता है । हाज़मे की मशीन नींद में सोते रहने से बंद-सी हो जाती है । अगेर सुबह उठ कर चला जाय तो वह चालू र २-३ घंटे में अपना बाक़ी काम कर डालती है । इससे ख़ूब भूख लगती स्त साफ़ होता है और तन्दुरुस्ती ठीक होती है ।

प्रातःकाल उठना अच्छे बुद्धिमानों ने सदा पसंद किया है । मूर्खों की बात ी है । प्रातःकाल उठकर ईश्वर से प्रार्थना करना चाहिए कि वह हमारा और का भला करे । फिर लड़कों को अपना पुराना पाठ याद करना चाहिए । ढ़ी हुई बातें दुहरानी चाहिए । फिर शौच जाना चाहिए और खुली हुइ हवा हलना चाहिए ।

प्रातःकाल का उठना वैद्यक-शास्त्र ने कर्त्तव्य में रख दिया और धर्म-शास्त्र ने और पुण्य में रख दिया है । बात एक ही है । दोनों ही इसे बेहतर समझते हैं ।

——

किशोरीदत्त शास्त्री

सूरज क्या है ?

अगर तुमसे कोई पूछे कि सूरज क्या है तो शायद तुम यही जवाब देगे कि सूरज आग का एक बहुत बड़ा गोला है। हमारी पृथ्वी से भी बहुत बड़ा। बात तो ठीक है। यही तुमने किताबों में पढ़ा भी होगा। पर क्या तुम बता सकते हो सूरज की आग किस चीज़ की बनी है—लकड़ी की या कोयले की ? शायद तुम कहो कि पत्थर के कोयले की। लेकिन अगर
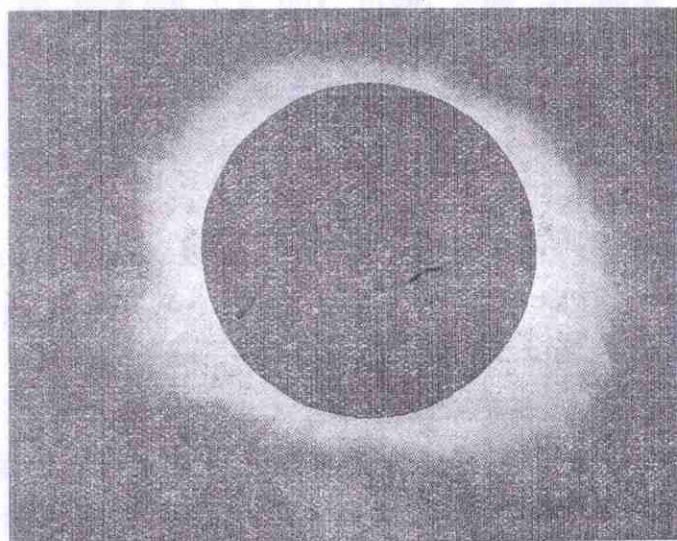
पूरा सूर्य्य-ग्रहण

कोयले की आग होती तो इस संसार को बने लाखों बरस हो गये, क्या अब तक वह बुझ न जाती ? क्या अब तक सूरज बुझ कर राख न हो जाता ?

विद्वानों का कहना है कि जितना बड़ा सूरज है यदि इतना ही बड़ा कोयले का पहाड़ जला दिया जाय तो वह पचीस हज़ार वर्ष से अधिक नहीं जल सकता

इसलिए यह तो मानना ही पड़ेगा कि सूरज चाहे जिन चीज़ों से बना हो पर उसमें कोयले आदि की भाँति कोई ठोस चीज़ नहीं है।

इँगलैंड और अमरीका में सूरज को देखने के लिए बड़े बड़े टेलिसकोप लगे हुए हैं। उनमें से देखने से सूरज के बारे में बहुत-सी मज़ेदार बातें मालूम होती रहती हैं। सूरज एक चमकदार गोले के समान दिखाई पड़ता है और जान पड़ता है उस पर चावल का बोरा बिखर पड़ा है। पर इन चावलों को छोटा न जानो। छोटे ये दूर से ही दिखलाई पड़ते हैं। ये असल में लपट के बड़े बड़े बादल होते हैं जो सूरज पर लोटते रहते हैं। ऐसे ही लपट के बादलों से सूरज बना है। इन्हें तुम जलती हुई भाफ़ या गैस कह सकते हो। सूरज के अब तक जलते रहने का कारण यह है कि ये गैसें दिन पर दिन सिकुड़ती जा रही हैं। इसी से गर्मी पैदा होती रहती है और सूरज जलता रहता है। इससे यह अँदेशा ज़रूर है कि आगे चलकर सूरज छोटा हो जायगा। पर उसके छोटे होने में भी अभी न जाने कितने वर्ष लगेंगे।
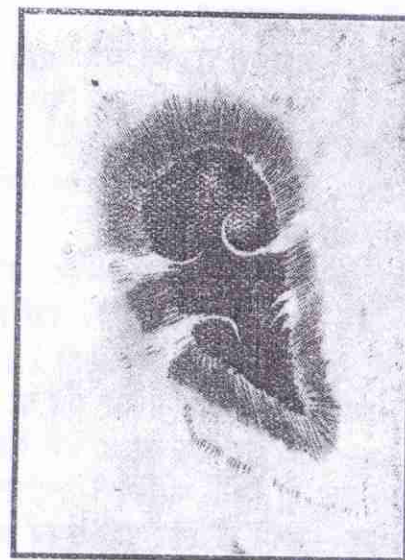
सूरज के धब्बे का चित्र

टेलिसकोपों से देखने से सूरज पर काले धब्बे भी दिखाई देते हैं। ये धब्बे पैदा होते रहते हैं और मिटते रहते हैं। इन धब्बों को देखकर पहले कुछ लोगों ने सोचा था कि सूरज में कुछ कुछ ख़राबी पैदा हो गई है। यानी या तो वह बीच से फट जायगा या इसी तरह धीरे धीरे ठंडा पड़ जायगा। पर अब

मालूम हुआ है कि सूरज पर बड़ी बड़ी आँधियाँ आती रहती हैं। इन आँधियों के कारण आग की लपटें लाखों मील ऊँची उठती हैं। इन लपटों में कहीं हमारी पृथ्वी पड़े तो बात की बात में मोम की तरह गल जाय। जब आँधी का बहुत
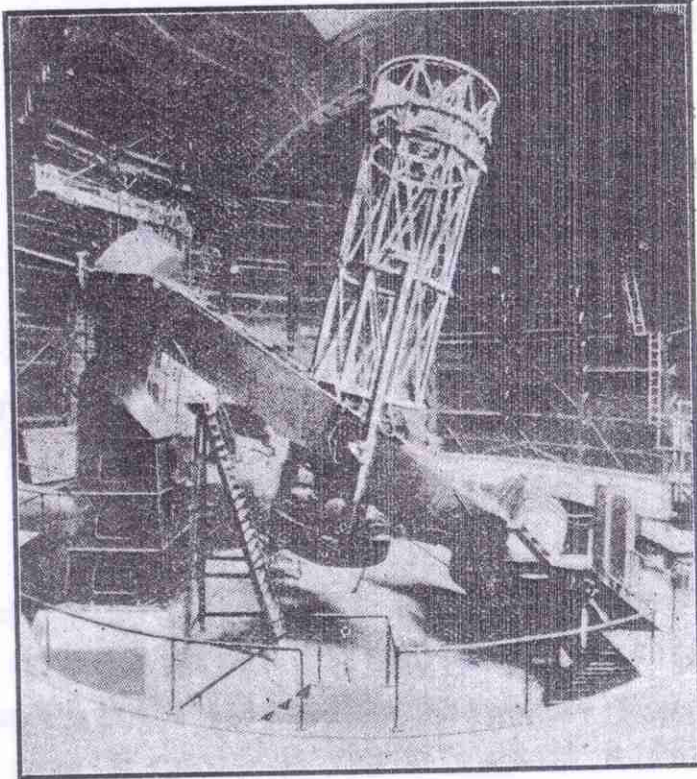
सूरज देखने का टेलिस कोप—यह कैलीफोर्निया [अमरीका] में है

ज़ोर होता है तब सूरज की गैस बनी सतह कहीं से फट जाती है, वही काली काली दिखाई पड़ती है। उसी को लोग सूरज के धब्बे कहते हैं।

इन धब्बों की चाल देखकर अब लोगों ने यह अनुमान किया है कि जैसे पृथ्वी चौबीस घंटे में अपनी धुरी पर एक चक्कर लगाती है वैसे ही सूरज भी अपनी धुरी पर घूमता है और उसे पूरा चक्कर लगाने में २५ दिन लगते हैं।

तुमने शायद पूरा सूर्य्य-ग्रहण न देखा होगा। पर जिन लोगों ने देखा है उनका कहना है कि जब पूरा सूर्य्य-ग्रहण लगता है तब आसमान में एक
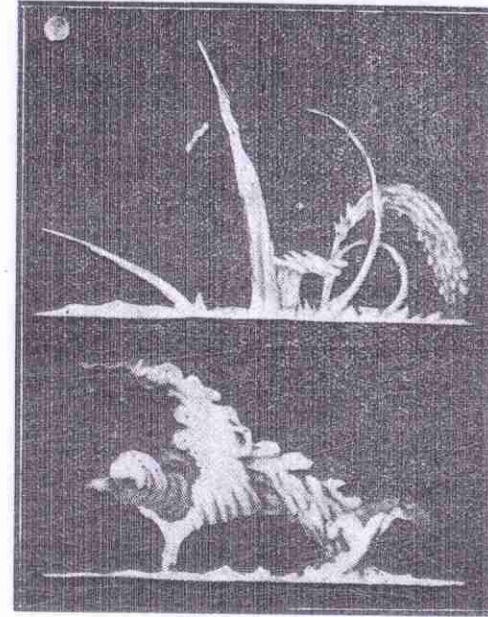
सूरज की लपटें

अजीब दृश्य दिखाई पड़ता है। सूरज तो छिप जाता है पर उसके स्थान पर एक विचित्र ज्योति-मंडल दिखाई पड़ता है। चाँद और तारे भी निकल आते हैं। कभी कभी सूरज की लपटें भी दिखाई दे जाती हैं। ये बड़ी सुन्दर मालूम पड़ती हैं और अनाज के पौधों की तरह उठती हुई दिखाई पड़ती हैं।

सत्यप्रकाश एम० एस-सी०

विद्यालय

बस्ती से बाहर विद्यालय,
जिसके निकट एक देवालय।
वहीं नित्य मैं पढ़ने जाता,
खूब राह में खेल मचाता॥
दो कमरे हैं बने निराले,
जिनके आगे छप्पर डाले।
वहीं बैठ कर हम पढ़ते हैं,
उन्नति के पथ पर बढ़ते हैं॥
हरा सामने सहन बड़ा है,
जहाँ खेल का खम्भ गड़ा है।
वहीं शाम को शोर मचाते,
बालक सारे मोद मनाते॥
पीछे एक पोखरा भारी,
जिस पर तन मन हो बलिहारी।
उसमें सभी स्नान करते हैं,
तैर तैर कर मन हरते हैं॥
बाईं ओर एक फुलवारी,
रंग-बिरंगी शोभाधारी।
जिसमें सब मन बहलाते हैं,
पाठ याद करने जाते हैं॥
खेत दाहिनी ओर खड़े हैं,
जो नाजों से भरे पड़े हैं।

रवि की आभा चमक दिखाती,
हरियाली सबके मन भाती॥
ऐसे रम्य सुहावन घर में,
गुरुगण लिये पुस्तकें कर में।
पढ़ने का है ढंग सिखाते,
जीवन का उद्देश्य बताते॥
वहाँ न मन कुछ घबराता है,
अपना घर न याद आता है।
मैं दिन भर रहता हूँ भूला,
सुन्दर चित्रों को लख फूला॥

चन्द्रभानसिंह

बन्दर का प्रेम

एक दिन एक शिकारी कुछ लोगों को लेकर सुमात्रा द्वीप के किसी जंगल में शिकार करने के लिए गया। कुछ दूर जाने पर और कोई जानवर तो न दिखाई पड़ा, हाँ, दिखाई पड़ी तो एक बँदरिया जो अपने बच्चे को गोदी में लेकर बैठी हुई थी। शिकारियों ने ऐसे शिकार को पाकर बड़े ही उत्साह से उसका पीछा किया। गो कि उसे अपने बच्चे को गोदी में लेकर और मौक़े की तरह तेज़ी से दौड़ने में सुविधा न हुई फिर भी एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूदती फाँदती हुई एक घने वन में पहुँची और जी-जान से अपने को छिपाने की कोशिश करने लगी। इस तरह दौड़ते दौड़ते शिकारी उसकी आँखों से ओझल होगये। लेकिन थोड़ी ही देर में उसने देखा कि वे फिर न जाने कहाँ से पहुँच गये।

शिकारियों ने देखा कि उसे पकड़ना बहुत मुश्किल है तो उसे गोली मारने लगे। एक गोली सनसनाती हुई उसके बगल से होकर चली गई। वह बेचारी बुरी तरह से घायल हो खून से लथपथ हो गई और उसकी देह से छल छल करके ख़ून बहने लगा। असहाय जानवर ने देख लिया कि मेरी मौत नज़दीक है। तब वह अपने प्राणों की उम्मेद छोड़ कर बच्चे को बचाने के लिए पागल की तरह कोशिश करने लगी।

अब बहुत ख़ून गिरने से पहले की तरह फुर्ती से न चल सकती थी इसी से बच्चे को एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर फेंक देती और ख़ुद बहुत कष्ट सहकर उसके पीछे पीछे जाने लगी। इस तरह धीरे धीरे जब वह बच्चे को एक ऐसी जगह पर ले गई जो ख़तरे से ख़ाली थी, तो उस समय उसकी आख़िरी घड़ी आ पहुँची; उसमें और चलने की ताक़त न रह गई। वह बँदरिया बहुत थक कर और कमज़ोर होकर एक बड़े पेड़ की डाली पर बैठ गई और माँ की प्यार-भरी नज़र से, जीवन की आख़िरी घड़ी तक बच्चे को देखने लगी। किन्तु यह देखना उसके भाग्य में अधिक नहीं बदा था। वह पीड़ा से बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ी और शरीर छोड़ दिया! शिकारी लोग जानवर के भीतर मा के प्यार का यह दृश्य देखकर अवाक् हो गये। अपनी निठुरता को याद कर मन ही मन अपने को बहुत धिक्कारने लगे। वह शिकारी आँखों में आँसू भरकर उस बँदरिया की मृत-देह को देखने लगा और उस दृश्य ने उस पर इतना असर डाला कि उसने प्रतिज्ञा की कि जीवन में ऐसी बेरहमी और निठुराई का बर्ताव किसी आदमी या जानवर से न करूँगा। उस बँदरिया का चमड़ा आज भी विलायत के अजायब-घर (म्यूज़ियम) में रक्खा हुआ है।

गणेश पाण्डेय

———

[यहाँ पर 'बाल-सखा' के छोटे पाठकों के कहानियाँ, कविताएँ और चुटकुले प्रतिमास छपा करेंगे—सं०]

१—"मेरी बहन"

मेरी बहन "दुर्गा" बड़ी दुलारी।
जो है घर में सबकी प्यारी॥

उसकी मीठी बोली मुझे लुभाती।
जो मैं आज्ञा देती उसे वह कर लाती॥

परन्तु गुड़िया खेलना उसे ख़ूब आता।
पर पढ़ना तनिक भी नहीं मन भाता॥

बाबूजी ने कर दिया शाला में भरती।
अब "दुर्गा" शाला जाने से है इनकार करती॥

हे ईश, ऐसा कीजिए कि पढ़ने जावै।
और पढ़ कर अपने कुल का यश बढ़ावै॥

गिरजादेवी, पटना

———

२—मुनिया

कैसी सीधी बछिया है यह,
मुनिया उस पर बैठी है।
प्यार में आकर कभी मारती,
कभी मिठाई देती है॥
मुन्नी का कर चाट चाट कर,
बछिया भी करती है प्यार।

रखती याद मिठाई की है,
और मानती है उपकार॥
इसी भाँति से प्यारे बालक,
आपस में रक्खो तुम प्रेम।

"भूलें नहिं उपकार किसी का,"
यही बना लो अपना नेम॥

जगतनारायण, शङ्खधार

३—'बाल-सखा' और 'शिशु'

बाल-सखा हम सबका प्यारा, ठीक समय पर आता है,
लपक लपक कर लड़के लेते, छीना झपटी खाता है।
"शिशु" का ढंग निराला है, वह पाँच माह तक सोता है,
रुपया देकर वी० पी० पाया, 'रमता बाबू' रोता है।

अवधविहारीप्रसाद गुप्त, सहँतवार

४—राजा का हुक्म

एक राजा ने हुक्म दे रक्खा था कि जो नया काम करो मुझसे पूछ कर करो। एक दिन उस नगर के एक घर में आग लग गई। राजा के पास अरज़ी दी गई कि मकान में आग लगी है बुझा देने का हुकुम दिया जावे। अदालत में कई तारीखें पड़ने पर ६ महीने बाद हुकुम मिला कि आग फ़ौरन बुझा दी जाय।

मकान और राजा का हुकुम दोनों ख़ाक में मिल गये क्योंकि वहाँ बचा ही क्या था।

श्रीशचन्द्र पोद्दार, कलकत्ता

५—मैं पैदल चलूँगा

मनुष्य—(मोटरवाले से) यहाँ से करनाल का क्या किराया लोगे और असबाब मेरे साथ है।

मोटरवाला—दस आने लूँगा और असबाब मुफ़ ले चलूँगा।
मनुष्य—अच्छा मेरा असबाब मुफ़ ले चलो मैं पैदल चलूँगा।

जनारधन, पानीपत

६—पसीना आ गया है

एक साहब निहायत काले थे, रात को धोके में उनके कपड़ों में स्याही लग
पर उन्हें मालूम न हुआ। जब वह दोस्तों में बैठे तो एक दोस्त ने कपड़ों पर
ले दाग़ देखकर पूछा कि लाला! यह क्या? एक मसख़रे ने जवाब दिया—
छ नहीं, ज़रा पसीना आगया है।

बनारसीदास, खेरी

७—अनोखे चित्र

चित्रकार—काशीप्रसाद, गया

अच्छी चाल

बच्ची, अच्छी चाल बनाओ ॥
अपनी अच्छी चालों से तुम सबके हृदय जुड़ाओ ॥१॥
करो बड़ों की सेवा मन से
लघु पर प्रेम दिखाओ।
कभी भूल कर नहीं किसी को कड़ुवे वचन सुनाओ ॥२॥
चाँदी सोने के गहनों से
तन को नहीं सजाओ।
अच्छे अच्छे गुण के सुन्दर गहनों को अपनाओ ॥३॥
गुड़िया ही की सेवा में मत
सारा दिवस बिताओ।
'राघव' नित कुछ पढ़कर लिखकर अपना ज्ञान बढ़ाओ ॥४॥

श्रीराघवप्रसादसिंह

हफ़्ता और दफ़्ता

एक लड़की थी। उसका नाम दफ़्ता था। वह अपने घर में अकेली रहती थी। वह बड़ी आलसी लड़की थी। उसकी लापरवाही से घर बड़ा गन्दा हो गया और कूड़ा-करकट से भर गया।

एक दिन उसने सुना, कि उसके देश का राजा शिकार को निकला है। वह उसके गाँव में इतवार की शाम को आयेगा। आकर उसी के मकान में ठहरेगा। उसके बाबा राजा के यहाँ नौकर थे। राजा उनका मकान जानता था।

मेरा नाम हफ़्ता है

बुध कूड़ा-करकट साफ़ करने लगा

यह सुनकर वह सन्नाटे में आगई! क्या करे? मकान की सफ़ाई इतनी जल्दी कैसे हो!

उसे कोई उपाय नहीं सूझा। एक कोने में बैठकर बड़े बड़े आँसू गिराने लगी। पछतावे के मारे देर तक उसने सिर नहीं उठाया। उसने सिसकते हुए आप ही आप कहा—"क्या करूँ, कोई उपाय नहीं दिखाई पड़ता।"

पास ही बहुत धीरे से कोई बोल उठा—"बात क्या है?" दफ़्ता ने समझा कोई गाँव की लड़की है। उसने सिसकते हुए सब हाल बता दिया। तुरन्त एक ज़मीन तक लम्बी सफ़ेद दाढ़ीवाला आदमी आकर उसके सामने खड़ा हो गया। वह हँसकर बोला—"मैं तुम्हारे मकान की सफ़ाई कर दूँगा, और तुम भी इसी तरह करती रहीं तो तुम्हारा घर सदा झकाझक रहेगा।"

दफ़्ता ने कहा—"आपकी बड़ी कृपा है, लेकिन ज़रा अपना नाम तो बता दीजिए बूढ़े बाबा!"

बूढ़ा बोला—"मेरा नाम है—हफ़्ता। मेरे सात नौकर हैं। सोमवार, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनीचर और इतवार।" वे एक एक दिन मेरे घर का काम करते हैं।

बस, हफ़्ता ने ज़ोर से पुकारा—"सोमवार!" तुरन्त ही एक परी आ गई।—फिर उसने कहा—"देखो, तुम्हें आज यहीं काम करना है।"

परी हँसी-खुशी से काम में जुट गई। उसने दीवालों को झाड़ा। चूना भिगो कर तमाम घर को पोता, दरवाज़ों और आलमारियों को रंगा। और फ़र्श को सफ़ाई से लीप डाला।

दफ़्ता ख़ुशी से उछल कर हफ़्ता महाशय को धन्यवाद देने लगी।

हफ़्ता महाशय ने कहा—"सोमवार का काम ख़तम हो गया।"—और दूसरे दिन आकर उन्होंने मंगल को पुकार कर कहा—"आज यहीं काम कीजिए।"

उसने बाबा आदम के समय के ज़ंग खाये हुए पिंजड़ों को भिगो कर रख दिया। दफ़्ता की रामी बिल्ली को लेकर ख़ूब अच्छी तरह नहलाया। पीलू दफ़्ता का कुत्ता था। वह इस दुर्गति से बचने के लिए भागा, पर मंगल ने तड़ाक से उसे पकड़ लिया। पीलू को भी ख़ूब धो-धाकर साफ़ कर दिया। अब फिर बारी आई गंगाराम (तोते) की। पीलू और रामी को नहलाये जाते

देखकर ये .खूब .खुश हो रहे थे, पर इस बार पंख फड़फड़ाने के सिवा मुँह से कुछ न निकला।

'मंगल' का नाम ख़तम हुआ। तीसरे दिन हफ़्ता महाशय ने आकर बुध को पुकारा और उस दिन उसे भी वहीं काम करने को कहा।

बुध ने बग़ीचे के कूड़े-कचरे को निकाल कर बाहर किया। एक भी सड़ी गली पत्ती नहीं छूटने पाई। टूटी-फूटी क्यारियों को दुरुस्त किया। कुएँ से पानी खींचकर .खूब पेड़ों और पौधों को सींचा।

बुध का भी काम ख़तम हुआ। हफ़्ता महाशय चले गये। दूसरे दिन आकर बृहस्पति को पुकारा, तुरन्त एक छोटी परी आगई। उन्होंने सिर हिलाकर कहा—"आज इसी घर में काम करना है।"

बस, उसने तमाम अरगनी और खूँटियों पर से कपड़े उतार लिये। नये और अच्छे कपड़े एक तरफ़ रख लिये, पुराने और फटे कपड़े लेकर बैठ गई। उन सबको अच्छी तरह सी डाला। फिर कुछ अच्छे-अच्छे कपड़े निकाल कर उन पर रंग-बिरंगे रेशमी फूल डाले, उनमें झालर आदि निकाली। तब तक शाम हुई।

हफ़्ता महाशय उसे बिदा करके गये और पाँचवें दिन आये। आकर शुक्रवार को पुकारा। एक बौना आया और आज्ञा पाकर अपने काम में लगा।

उसने घर के तमाम मैले कपड़ों को लेकर चट्टान पर पानी में भिगो दिया। फिर सबमें एक-एक करके साबुन लगा डाला। और ज़रा देर के लिए धूप में डाल दिया। थोड़ी देर बाद सबको फींच-फींच कर सफ़ेद करके सूखने को डाल दिया। जो जो कपड़ा सूखता गया, उसे तहा-तहा कर हिफ़ाज़त से सन्दूकों में रख दिया।

छठे दिन हफ़्ता महाशय ने शनीचर को बुलाकर आज्ञा दे दी।

शनीचर हफ़्ता महाशय की ही तरह बहुत बूढ़ी स्त्री थी। लेकिन उसके बदन में बड़ी फुर्ती थी। आते ही वह हफ़्ता की बाँह पकड़ कर भीतर ले गई। उसे .खूब मलमल कर नहलाया। उसके चीकट कपड़ों को धो कर डाल दिया। अच्छे अच्छे कपड़े उसे पहनाये। उसके रूखे बालों को कंघी से साफ़ किया, उनमें तेल लगाया। और .खूब चुन-चुन कर फूलों के साथ उन्हें गूथ दिया। शाम होगई।

बृहस्पति ने बर्तनों को साफ़ कर डाला

दफ़्ता ने प्रतिज्ञा की कि वह भी रोज़ का काम रोज़ करेगी

सातवें दिन हफ़्ता महाशय ने इतवार को बुलाकर काम करने को कहा।

उसने आते ही रसोई-घर खोल दिया। बर्तनों को साफ़ करके कई तरह का शाक बनाया। बाज़ार से सामान लाकर .खूब अच्छे अच्छे भोजन और मिठाई तैयार की। शाम को चला गया। तब हफ़्ता महाशय ने दफ़्ता से कहा—"अगर इसी तरह तुम भी सोमवार को सोमवार का, मंगल को मंगल

का, बुध को बुध का, बृहस्पति को बृहस्पति का, शुक्र को शुक्र का, शनि को शनि का और इतवार को इतवार का काम करती रहो तो तुम्हारा घर सदा इसी तरह सजा-बजा रहे।"

दफ़ा ने धन्यवाद देकर प्रतिज्ञा की, कि वह आगे वैसा ही करती रहेगी। फिर वह राजा का स्वागत करने बाहर निकली।

राजा ने आकर उसके घर को देखा, तो बहुत ख़ुश हुआ। उसने कहा—"बेटी! तेरे घर की सजावट देख मैं प्रसन्न हूँ।"

दफ़ा ने कुछ उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप नीचा मुँह किये हफ़्ता महाशय से जो प्रतिज्ञा की थी उसी को दुहरा रही थी।

शम्भूदयाल सक्सेना

मेंढक

ख़ुश्क अभी तालाब पड़ा था, मेंढक थे न कहीं कीड़ा था।
यह लो आगये काले बादल, पानी बरसा होगया जल थल॥
लाखों मेंढक निकल पड़े हैं, कुछ छोटे कुछ बहुत बड़े हैं।
कुछ पीले हैं कुछ मटयाले, कुछ हैं इनमें काले काले॥
ताल में पानी क्या भर आया, मानो राज इन्होंने पाया।
क्या बतलायें कैसे ख़ुश हैं, फूल गये हैं ऐसे ख़ुश हैं॥
तैर रहे हैं कुछ पानी पर, बैठे हैं कुछ ताल के बाहर।
हैं तो पतली पतली टाँगें, पर भरते हैं कैसी छलाँगें॥
कीड़ा देखा! कोई ज़मीं पर, मार छलाँगें पहुँचे वहीं पर।
ताक के पकड़ा उसको झट पट, कर गये मुँह में दबाते ही चट॥
बैठ के कैसा गला फुला कर, करते हैं यह टर टर टर टर।
हर दम शोर मचाना उनको, कान हमारे खाना उनको॥

श्याममोहनलाल 'जिगर', बी० ए०

तैराक लड़की

ज़रा इस लड़की को देखिए। अभी यह चार ही वर्ष की है पर समुद्र में घंटों तैरती रहती है। डुबकी लगाने में और छोटी नाव खेने में भी यह बहुत होशियार है। इन बातों में बड़े बड़े आदमी इससे हार मान जाते हैं। यह लड़की न्यूयार्क नगर (अमरीका) की रहने-वाली है। और इसका नाम मेरी हूरगर है।
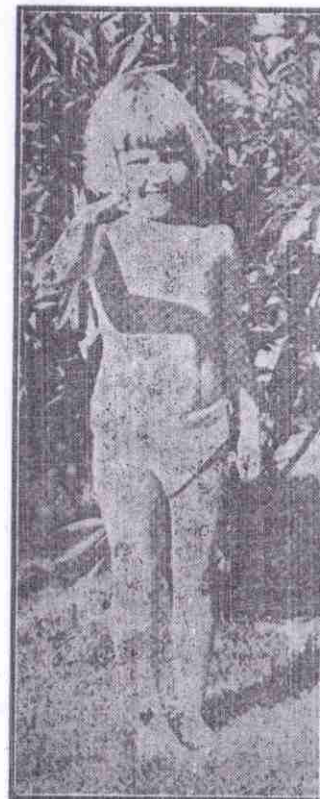
पा-पा पा-पा करती है यह।
नहीं किसी से डरती है यह॥

(पुट्टुर आयु ६ मास पुत्री श्रीतेजेनकुमार मित्र चित्रकार)
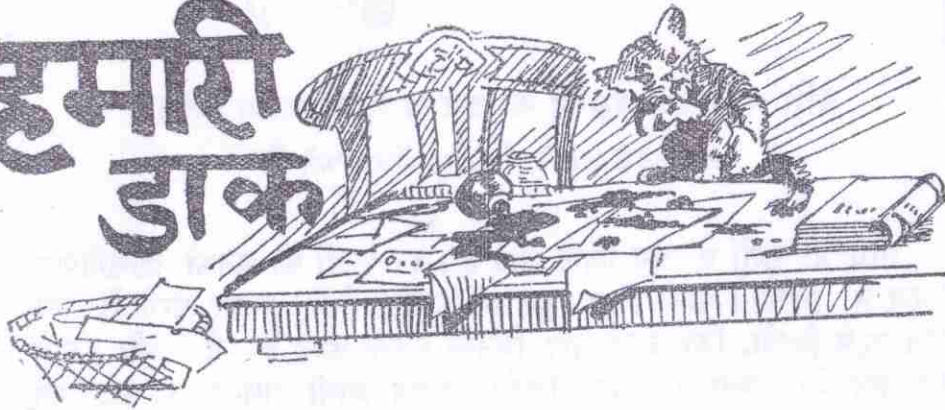
(१)

प्रिय किशोरीशरन,

तुम्हारी ११ दिसम्बर की चिट्ठी मिली। घड़ीवाला इनाम जिस बालक को दिया गया है वह निवास, मंडला का रहनेवाला है, मंडल भूल से छप गया है। उस बालक को यह इनाम क्यों मिला और तुम्हें क्यों नहीं मिला, यह बात तुम इनाम देनेवाले सज्जन को एक कार्ड लिखकर पूछ सकते हो। लालाजी के जीवन-चरित्र में दूसरा सन् ग़लत है, उसे काटकर १८८५ बना लो। तुमने लिखा है कि इनाम एक ही लड़के को मिलेगा इसलिए पहेलियों का जवाब न भेजूँगा। सीता के स्वयंवर में धनुष एक ही ने तोड़ा था पर शामिल होने सब राजा गये थे। अगर सब सोच लेते कि ब्याह एक ही के साथ होगा, हम सब स्वयंवर में क्यों चलें तो शायद सीता का स्वयंवर ही न होता। नतीजा क्या होगा, यह नहीं सोचना चाहिए। हमारा काम है कि हम बराबर कोशिश करते चलें। तुम्हारे बाबूजी ने यह झूठ कहा है कि इनाम सिनाम कुछ नहीं मिलता, यह

ग्राहक बढ़ाने का ढङ्ग है। उनसे कह देना कि इनाम के लिए जिन लड़कों का नाम छापा जाता है, उनसे वे पत्र लिख कर पूछ सकते हैं। जैसे तुम बाल-सखा के ग्राहक इनाम के लालच से नहीं हुए हो वैसे ही कोई भी बालक इनाम के लालच से ग्राहक नहीं बनता। फिर, बाल-सखा के ग्राहक आपही आप बढ़ रहे हैं! क्या तुम नहीं चाहते कि उसके ग्राहक बढ़ें, क्या तुम्हारे बाबूजी नहीं चाहते कि उसके ग्राहक बढ़ें। इसलिए यदि ग्राहक बढ़ाने के ख़याल से भी इनाम दिया जाता हो तो इसमें बुराई क्या है? एक पंथ दो काम कौन नहीं पसन्द करेगा? पर यह तो बतलाना कि यह चिट्ठी तुमने स्वयं लिखी है या तुम्हारे बाबू बोलते गये हैं और तुम लिखते गये हो?

(२)

हमारे प्यारे छोटे दोस्तो,

इस अंक से बाल-सखा का बारहवाँ साल समाप्त होता है। इस अवसर पर हम तुम सबको बिना बधाई दिये नहीं रह सकते; क्योंकि तुम सबकी मदद न होती तो इस साल का बाल-सखा इतना सुन्दर न निकलता। तुम लोगों ने जो चुटकुले और लेख भेजे वे बहुत ही अच्छे थे। तुम लोगों ने बाल-सखा के जो नये ग्राहक बनाये, उसके लिए बाल-सखा तुम्हें धन्यवाद देता है। और हमें विश्वास है कि तुम भी बाल-सखा की सेवाओं को स्वीकार करोगे।

तुम्हारी ही मदद का फल है कि नये साल से हम बाल-सखा को दूने जोश के साथ सजाने का प्रयत्न कर रहे हैं। तुम्हें शायद यह न मालूम होगा कि विलायत आदि में लड़कों के जो अख़बार निकलते हैं उनको इस बात का बड़ा घमण्ड होता है कि उनके पढ़नेवाले बालक-बालिकाओं की संख्या लाखों होती है। हिन्दी में यह सौभाग्य किसी पत्र को प्राप्त नहीं है। हमारी यह इच्छा

है कि बाल-सखा विलायत में लड़कों के जो अखबार निकलते हैं उनका ताल ठोककर मुक़ाबला करे और उनसे कह दे कि हमारे छोटे पाठकों की संख्या लाखों नहीं करोड़ों है। वह बड़ा सुन्दर दिन होगा जब हमारे देश के सभी बालक अपना प्यारा बाल-सखा पढ़ने के लायक़ हिन्दी सीख लेंगे। हम बालकों का यही राष्ट्रीय काम है। हम अपने प्यारे साथियों को पढ़ने-लिखने में मदद करें इससे बढ़कर घमंड करने की बात हमारे लिए और क्या हो सकती है। आशा है हमारी बात पर तुम सब विचार करोगे और भारतवर्ष में तुम्हारे जितने हँसते बोलते छोटे साथी हैं उन सबकी सेवा करने में हमारी सहायता करोगे; इति। इस साल के लिए नमस्कार। अब नये साल के पहले महीने में हमारी तुम्हारी फिर बातें होंगी। आशा है तब मैं तुम्हें ऐसी ऐसी बातें बतलाऊँगा जिनको सुनकर तुम्हारी .खुशी का ठिकाना न रहेगा।

तुम्हारा
सम्पादक

प्रति मास ५० लड़कों को इनाम दिया जाया करेगा

सब लड़के लड़कियाँ जवाब भेज सकते हैं

(१)

नीचे नौ फूलों के नाम लिखे जाते हैं। इन फूलों को उनकी लोकप्रियता के क्रम से लिखो। यानी जिस फूल को ज्यादा लोग पसन्द करते हों उसे सबसे पहले लिखो, फिर उसके बाद जिनको पसन्द करते हैं उन्हें लिखो। इसी तरह सबों को नम्बर डाल कर लिखो। केवल अपनी पसन्द की बात मत लिखो, यह देखो कि दूसरे लड़के लड़कियाँ किसे अधिक पसन्द करते हैं। इसलिए अच्छा यह होगा कि उत्तर भेजने से पहले अपने बहुत से दोस्तों से पूछ लो कि वे क्या सबसे अधिक पसन्द करते हैं। जो जितने ही अधिक लड़कों से पूछेगा उसका जवाब उतना ही ठीक हो सकता है।

बेला	गुलाब	सूर्य्यमुखी
चमेली	चम्पा	हरसिंगार
गेंदा	कमल	कनैल

(२)

नीचे लिखी कविता की चौथी लाइन अभी नहीं बनाई गई। क्या तुम उसे बना सकते हो ?

बाल-सखा है नाम हमारा।
खेल-कूद है काम हमारा।
देखा है मैंने जग सारा॥
....

(३)

क—मुझे जितना ही काटो उतना ही मैं बढ़ता हूँ, बताओ मैं क्या हूँ।

नानकचन्द

ख—सीढ़ी बिन ऊपर चढ़ता हूँ। पैर बिना आगे बढ़ता हूँ॥
काला सब कुछ कर देता हूँ। सुन्दरता सब हर लेता हूँ॥

कल्याणकुमार

इनाम पाने के नियम

नीचे जो कूपन दिया जाता है उसे लकीर पर से काट लो और जवाब के साथ भर कर भेजो। जितने जवाब आवेंगे उनमें से ५० ऐसे जवाब चुन लिये जायँगे जो बाक़ियों से अच्छे होंगे। इन पचासों लड़कों को एक एक पुस्तक इनाम दी जायगी और उनके नाम बाल-सखा में छापे जायँगे। जो यह कूपन नहीं भेजेंगे उनके जवाब पर विचार नहीं किया जायगा।

बाल-सखा—प्रश्न-पहेली-प्रतियोगिता दिसम्बर १९२८

मैं नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर भेज रहा हूँ

१—लोकप्रिय फूल २—कवितापूर्ति ३—बुझौवल

(जिसका जवाब न भेजो उसे काट दो)

नाम.................................... आयु...............

पता..

इनाम जीतने पर मैं अनोखी-कहानियाँ, प्रह्लाद, दमयन्ती, सावित्री, नामक पुस्तक लूँगा। (एक को छोड़ कर बाक़ियों को काट दो।)

माता, पिता, बड़े भाई, बहिन या गार्जियन का हस्ताक्षर.....................

बाल-सखा

सचित्र मासिक पत्र

भाग १२

१९२८

सम्पादक
श्रीनाथसिंह

प्रकाशक
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग
वार्षिक मूल्य २॥) रुपये

BALSAKHA—Registered No. A 794

Yearly Subscription, Rs. 2-8-0.
वार्षिक मूल्य २॥)

सम्पादक—श्रीनाथसिंह

5 as. per copy.
प्रति संख्या ।-)

Printed and published by K. Mittra, at the Indian Press, Ltd., Allahabad.

बाल-सखा के नियम

(१) बाल-सखा मासिक पत्र है। इसका वार्षिक मूल्य २॥) और एक प्रति का मूल्य ।-) है।

(२) पत्र-व्यवहार करते समय ग्राहकों को अपना ग्राहक-नंबर अवश्य देना चाहिए नाम, पता और ग्राहक-नंबर साफ़ साफ़ न लिखने से उनकी आज्ञा का पालन न हो सकेगा। पत्र-व्यवहार **'मैनेजर, बाल-सखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग'** के पते से होना चाहिए।

(३) जिन सज्जनों को किसी मास का बाल-सखा न मिले उन्हें पहले अपने डाकघर से पूछना चाहिए। अगर पता न लगे तो डाकघर से जो उत्तर आवे उसे हमारे पास—जिस महीने की संख्या न मिली हो उसके अगले महीने की १५ तारीख़ तक भेजें। उनको दूसरी संख्या भेज दी जावेगी। अगर ऐसा न किया गया तो संख्या बिना मूल्य न मिल सकेगी। बाल-सखा यहाँ से दो बार अच्छी तरह जांच कर रवाना किया जाता है। अतएव इस विषय में पहले डाकघर से ही पूछताछ करना अच्छा होगां।

(४) यदि एक दो मास के ही लिए पता बदलवाना हो तो डाकख़ाने से प्रबन्ध कर लेना चाहिए। यदि सदा के लिए बदलवाना हो तो उसकी सूचना हमें अवश्य देनी चाहिए।

(५) लेख, समालोचना के लिए पुस्तकें और बदले के पत्र आदि **'सम्पादक, "बाल-सखा", इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग'**—के पते से भेजने चाहिएँ।

(६) किसी लेख अथवा कविता के प्रकाशित करने या न करने तथा उसे लौटाने या न लौटाने का अधिकार सम्पादक को है। लेखों के घटाने-बढ़ाने का भी अधिकार सम्पादक को है। जो लेख सम्पादक लौटाना मंजूर करें उसका डाक और रजिस्टरी का ख़र्च लेखक को भेजना होगा। अधूरे तथा राजनीति से सम्बन्ध रखने वाले लेख नहीं लिये जाते।

बाल-सखा में विज्ञापन

विशेष स्थानों में विज्ञापन की छपाई:—

	प्रतिमास
कवर का दूसरा पृष्ठ	१६) "
" " " एक कालम	१०) "
" " तीसरा पृष्ठ	१६) "
" " " एक कालम	१०) "
" " चौथा पृष्ठ	२१) "
" " " एक कालम	१२) "
पाठ्य विषय के अन्त का, सामनेवाला, पूरा पृष्ठ	१४) "
" " " एक कालम ...	८) "
कवर के द्वितीय पृष्ठ के सामनेवाला पृष्ठ	१४) "
" " " " एक कालम ...	८) "
रङ्गीन चित्र से पहलेवाला पृष्ठ ...	१४) "
" " " " एक कालम ...	८) "
कवर के तीसरे पृष्ठ के सामनेवाला पृष्ठ	१४) "
" " " " एक कालम ...	८) "
लेख-सूची के नीचे १/२ पृष्ठ ...	८) "
" " " १/२ कालम ...	५) "
" " " १/४ "	३) "

साधारण नियम:—

१ पृष्ठ या २ कालम की छपाई	१२)	प्रतिमास
१/२ " या १ " " ...	७)	"
१/४ " या १/२ " " ...	४)	"
१/८ " या १/४ " " ...	२)	"

१—विज्ञापन बिना देखे नहीं छापा जाता।

२—एक कालम या इससे अधिक विज्ञापन छपानेवाले को बाल-सखा बिना मूल्य भेजा जाता है। औरों को नहीं।

३—विज्ञापन की छपाई पेशगी ली जाती है।

४—साल भर के विज्ञापन की छपाई एक-मुश्त पेशगी देनेवालों से =) फ़ी रुपया कम लिया जायगा।

पत्र-व्यवहार इस पते से कीजिए—

मैनेजर, बाल-सखा,

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।